आँखों में धूल झोंककर मुरीद बनाते थे चंद्रास्वामी

राजेश जोशी

नई दिल्ली, 24 मई (बीबीसी)। पिछले कुछ समय से बीमार चल रहे चंद्रास्वामी की मौत मंगलवार को हो गई। तांत्रिक चंद्रास्वामी की बड़ी-बड़ी आँखें लाल हो गईं और उन्होंने अपने हाथ में ली हुई कागज की चिंदी का गोला-सा बनाकर मेरी तरफ खींच कर दे मारा और जोर से चिल्ला कर कहा -लो देख लो अपना भविष्य!

दिल्ली में कुतुब इंस्टीट्यूशनल एरिया के उनके दुमहले के एक विशाल कमरे में मैं चंद्रास्वामी के साथ अकेले बैठा था। उन्हें मालूम था कि मैं ही वो रिपोर्टर हूँ जिसकी एक रिपोर्ट की वजह से उन्हें छह महीने तक तिहाड़ जेल की हवा खानी पड़ी थी। जाहिर है वो मुझसे नाराज रहे होंगे, लेकिन इस मुलाकात में उन्होंने अपनी नाराजगी जाहिर नहीं की।

मैंने देखा कि बातचीत के बीच में वो एक कागज के टुकड़े में रह-रहकर कुछ लिखने लगते। थोड़ी देर बाद उन्होंने उस कागज की चिंदी को अँगूठियों से भरी अपनी मोटी-मोटी अँगुलियों के बीच घुमा-घुमाकर एक छोटा गोला-सा बना डाला और उससे खेलते रहे। फिर उन्होंने मुझसे तीन सवाल पूछे, ठीक वैसे ही जैसे कि कस्बे में तमाशा दिखाने वाला मदारी अपने चारों ओर इकट्ठा हो आई भीड़ से पूछता था।

0 से 9 के बीच एक अंक बताओ?

मैंने जवाब दिया- 5

एक पक्षी का नाम लो?

मेरा जवाब था- मोर।

एक पुष्प का नाम लो?

मैंने कहा- कमल।

यही वो पल था जब उन्होंने अपनी गुदगुदी हथेली में रखा कागज फेंक कर मेरे मुँह पर दे मारा था।

मैंने कुछ चकित और हतप्रभ सा दिखने की कोशिश करते हुए उस कागज के गोले को धीरे-धीरे खोलना शुरू किया।

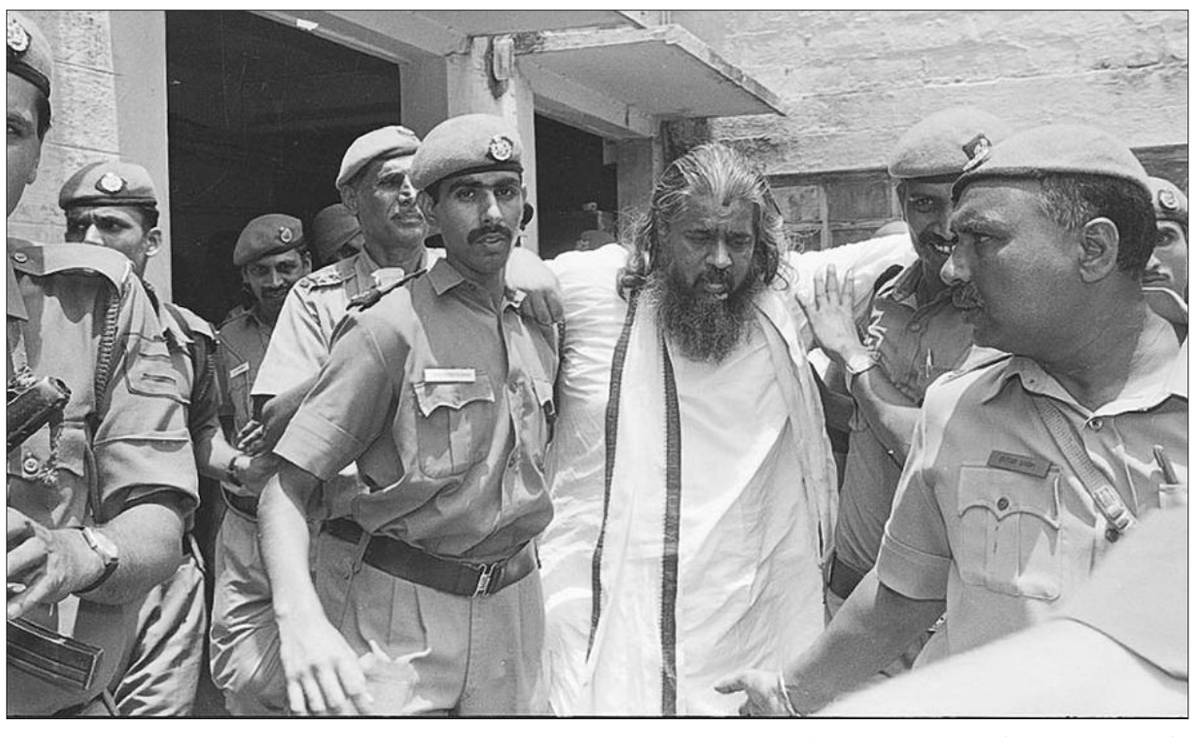

उसमें लिखा था- पाँच, मयूर और कमल। यानी मेरे जवाब देने से पहले ही चंद्रास्वामी ने उस कागज पर मेरा जवाब लिख डाले थे। अगर मैं कहूँ कि मैं बिल्कुल भी चमत्कृत नहीं था तो ये झूठ होगा।

सिंहासन जैसी अपनी ऊँची कुर्सी पर बैठे चंद्रास्वामी के चेहरे पर विजय का भाव था, पर मुझ जैसा काइयाँ रिपोर्टर जानता था कि ऐसे ही मदारी वाले करतब दिखाकर इस तांत्रिक ने बड़े-बड़ों की आँखों में धूल झोंककर उन्हें अपना मुरीद बना लिया था। मुरीद ही नहीं बनाया बल्कि अंतरराष्ट्रीय पैमाने पर अपने असर-रसूख का एक ताना-बाना बुन डाला था।

जिसमें हथियारों के दलाल, बड़े-बड़े ताकतवर देशों के ताकतवर प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, बादशाह, अफसर और व्यापारी मकड़ी के जाले में कीड़ों की तरह उलझते चले गए।

भारत के पूर्व विदेश मंत्री कुँवर नटवर सिंह ने अपनी किताब वन लाइफ इज नॉट इनफ में लिखा है कि आयरन लेडी कही जाने वाली ब्रिटेन की प्रधानमंत्री मार्गरेट थैचर को इसी तरह का जादू दिखाकर अपने प्रभाव जाल में लपेट लिया।

उनके तिलिस्म से प्रभावित लोगों में हथियारों के व्यापारी अदनान खशोगी, ब्रूनेई के सुल्तान, हॉलीवुड अभिनेत्री एलिजाबेथ टेलर जैसी हस्तियाँ शामिल थीं।

राजीव गाँधी की हत्या के बाद जब 1991 में पीवी नरसिम्हा राव भारत के प्रधानमंत्री बने तो दिल्ली में आमफहम बात थी कि 7 रेसकोर्स रोड में प्रधानमंत्री निवास के गेट चंद्रास्वामी के लिए खुल गए हैं। नरसिम्हा राव प्रधानमंत्री बनने के बहुत पहले से चंद्रास्वामी के करीबी दोस्त थे। ब्रिटेन के एक गुजराती व्यापारी लखुभाई पाठक ने नरसिम्हा राव पर चंद्रास्वामी की मदद से उनसे रुपये ठगने का आरोप भी लगाया था।

नब्बे के दशक के उस दौर में राजनीति, व्यापार, जासूसी, अंतरराष्ट्रीय संबंध, हथियारों की खरीद-फरोख्त आदि गतिविधियों में किसी न किसी तरह से चंद्रास्वामी का नाम आ ही जाता था।

बोफोर्स कांड की लहर पर सवार होकर जब विश्वनाथ प्रताप सिंह ने राजीव गाँधी को 1989 के आम चुनाव में हराकर दिल्ली में जनता दल की सरकार बनाई, तभी से उनकी ईमानदार छवि में दाग लगाने की साजिशें शुरू हो गई थीं।

कुछ ही समय में अखबारों में सेंट किट्स कांड के फर्जी दस्तावेज छापे जाने लगे जिससे ये साबित करने की कोशिश की गई कि वीपी सिंह के बेटे अजेय सिंह ने सेंट किट्स द्वीप के बैंकों में काला धन छिपाकर रखा है।

इन सभी खबरों में बार-बार चंद्रास्वामी का नाम आता रहता था। दिलचस्प बात ये थी कि ऐसी कोई राजनीतिक पार्टी नहीं थी जिसमें चंद्रास्वामी के दोस्त न हों। मगर जितने उनके दोस्त, उससे ज्यादा दुश्मन। **(बाकी पेज 18 पर)**

आज कल

अब मेरा और बदतर हाल कर दिया जाएगा-फारूक डार

माजिद जहांगीर

बड़गाम, 24 मई (बीबीसी)। नौ अप्रैल को श्रीनगर लोकसभा सीट पर हुए उपचुनाव के बाद डार को जीप में बांधने का वीडियो वायरल हो गया था। मेरी जगह अगर अवॉर्ड देने वालों के बच्चों को मानव ढाल बनाकर जीप से बांधा गया होता तब क्या होता?

यह सवाल है कश्मीरी नौजवान फारूक अहमद डार का, जिसे भारतीय सेना के एक आला अधिकारी ने मानव ढाल के तौर पर जीप के आगे बांध दिया था। खबरों के मुताबिक उस अधिकारी यानी मेजर एल गोगोई को सेना ने सम्मानित किया है।

क्या मेरी खता है कि मैं कश्मीरी हूं, बीबीसी से बात करते हुए फारूक डार के सवालों का सिलसिला जारी रहा। उन्होंने कहा कि यहाँ इंसाफ को जमीन पर रौंदा जाता है और जुल्म करने वालों की मदद की जाती है। डार ने कहा कि उन्हें जीप के बोनट पर मानव ढाल की तरह बांधने वाले अधिकारी को सजा मिलनी चाहिए।

दूसरी तरफ मेजर गोगोई ने दावा किया है कि फारूक अहमद डार सेना पर पत्थर फेंकने वालों को उकसा रहे थे और उन्हें जवानों ने काफी मुश्किल से पकड़ा था। मीडिया से बात करते हुए गोगोई ने कहा है कि जैसे ही उन्होंने अपने जवानों को डार को जीप में बांधने का हुक्म दिया पथराव रुक गया और सेना की टुकड़ी वहां से निकलने में कामयाब रही।

सेना के अधिकारी का कहना है कि डार को जीप से बांधने की वजह से वो बहुत से लोगों की जानें बचा पाए, क्योंकि अगर वो पथराव कर रही भीड़ पर गोली चलाने का हुक्म देते तो कम से कम दर्जन भर लोगों की मारे जाने का खतरा था।

डार का दावा है कि वह उपचुनाव में मतदान करने आए थे। उन्होंने कहा कि मैंने वोट भी डाला था फिर भी मेरे साथ जुल्म हुआ और मुझ पर जुल्म करने वाले को सम्मानित किया जा रहा है।

हालांकि सेना की तरफ से राष्ट्रीय राइफल्स के मेजर एल गोगोई को सम्मान दिए जाने का कोई बयान जारी नहीं हुआ है, लेकिन पीटीआई ने सूचना और प्रसारण मंत्री वेंकैया नायडू के हवाले से कहा है कि मेजर लितूल गोगोई ने विशेष परिस्थितियों में जानें बचाई हैं और सेना ने इसे सराहा है।

अप्रैल में अपने साथ हुई उस घटना को याद करते हुए डार ने कहा कि इस वाकये के बाद मेरा दिमाग काम नहीं करता है। मैं दिन में काम करके पचास-सौ रुपए कमा लेता था, लेकिन अब वो भी नहीं हो पाता। डार ने कहा कि जब शाम होती है तो जैसे मेरे लिए कयामत आती है। जिन्होंने मेरा यह हाल किया है उन्हें सजा मिलनी चाहिए। मैं सरकार से इंसाफ की मांग करता हूँ।

कश्मीरी युवक का कहना है कि मेरे दिल में अब खौफ और भी बढ़ गया है। वह अधिकारी अवॉर्ड मिलने के बाद अब फिर उस कैंप में आएगा। कल से मैंने जब ये सुना, मैं और भी परेशान हो गया हूं। वह वापस आएगा और मेरा उससे भी बदतर हाल कर दिया जाएगा। पुलिस ने इस सिलसिले में एक केस दर्ज किया था। सेना ने कोर्ट ऑफ इन्क्वायरी बिठाने की बात कही थी।

भारत प्रशासित जम्मू-कश्मीर के इंस्पेक्टर जनरल ऑफ पुलिस मुनीर खान ने मंगलवार को मीडिया को बताया कि मामले में जाँच जारी रहेगी। श्रीनगर में सेना के प्रवक्ता कर्नल राजेश कालिया के मुताबिक कोर्ट ऑफ इन्क्वायरी का काम आखिरी चरण में है।

बाहुबली के कटप्पा समेत आठ के खिलाफ जारी हुआ वॉरंट

नई दिल्ली, 24 मई (बीबीसी)। तमिलनाडु की एक अदालत ने मंगलवार को आठ तमिल फिल्म कलाकारों के खिलाफ गैरजमानती वॉरंट जारी किया है।

इन कलाकारों में बाहुबली फेम वाले कटप्पा (अभिनेता सत्यराज), सूर्या, आर शरत कुमार, श्रीप्रिया, विवेक, विजय कुमार, अरुण विजय और फिल्म डायरेक्टर चेरन शामिल हैं। मानहानि के एक मुकदमे में अदालत में पेश नहीं होने के कारण नीलगिरि क्रिमिनल कोर्ट ने इन कलाकारों के खिलाफ ये गैरजमानती वॉरंट जारी किया है।

फिल्म कलाकारों पर मानहानि का ये मुकदमा एक पत्रकार ने दायर कर रखा है। साल 2009 के इस मामले में तमिलनाडु के एक अखबार में छपे एक लेख की दक्षिण भारतीय फिल्म कलाकारों के संगठन ने निंदा की थी।

दरअसल, देहव्यापार के एक केस में पुलिस ने फिल्म अभिनेत्री भुवनेश्वरी को गिरफ्तार किया था और इसके बाद एक अखबार ने इस पेशे से जुड़ी कुछ अभिनेत्रियों की लिस्ट पब्लिश की थी, जिसे लेकर ये विवाद खड़ा हुआ था।

फिल्म कलाकारों का कहना था कि इस लेख से फिल्म अभिनेत्रियों की छवि को नुकसान पहुंचा है। शिकायतकर्ता पत्रकार का दावा था कि इन फिल्म कलाकारों ने एक अखबार की निंदा करने के बजाय पूरे पत्रकार समुदाय का अपमान किया।

कुलभूषण से लेकर सलमान तक के वकील साल्वे अगले अटॉर्नी जनरल बनने वाले हैं!

सुनी-सुनाई

नई दिल्ली, 24 मई (सत्याग्रह)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ वकील हरीश साल्वे से बेहद खुश हैं। कुलभूषण जाधव को बचाने के लिए विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने सार्वजनिक तौर पर साल्वे को शुक्रिया कहा है। इंटरनेशनल कोर्ट ऑफ जस्टिस में साल्वे ने सिर्फ एक रुपये की फीस लेकर भारत सरकार का मुकदमा लड़ा। साल्वे की दलील सुनकर सरकार का शीर्ष नेतृत्व गदगद हो गया। सुनी-सुनाई से कुछ ज्यादा है कि हरीश साल्वे को मोदी सरकार अब एक बहुत बड़ा पद देने वाली है। अटॉर्नी जनरल मुकुल रोहतगी की जगह हरीश साल्वे को नया अटॉर्नी जनरल बनाने पर विचार चल रहा है।

दरअसल हेग में पाकिस्तान के खिलाफ मुकदमे में जिरह के लिए खुद अटॉर्नी जनरल मुकुल रोहतगी जाना चाहते थे। लेकिन प्रधानमंत्री के स्तर पर उनकी फाइल रोक दी गई। कहा जाता है कि उनके ही कहने पर हरीश साल्वे को कुलभूषण जाधव का मुकदमा लड़ने के लिए भेजा गया। इस बारे में सुब्रमण्यम स्वामी ने मीडिया से साफ कहा कि कुलभूषण जाधव को बचाने का क्रेडिट प्रधानमंत्री को जाना चाहिए जिन्होंने मुकुल रोहतगी की जगह हरीश साल्वे को हेग भेजा।

सरकार के अंदर के समीकरण को समझें तो मुकुल रोहतगी वित्त मंत्री अरुण जेटली के मित्र हैं और हरीश साल्वे की नजदीकी भाजपा अध्यक्ष अमित शाह से है। जब मोदी सरकार बनी तब भी अटॉर्नी जनरल के तौर पर हरीश साल्वे का नाम प्रधानमंत्री के सामने आया था, लेकिन उस वक्त साल्वे व्यक्तिगत वजहों से अटॉर्नी जनरल नहीं बनना चाहते थे। कुछ दिनों तक मुकुल रोहतगी की नियुक्ति की फाइल रोकी भी गई। लेकिन साल्वे के

तैयार न होने पर फैसला रोहतगी के पक्ष में हो गया। लेकिन पिछले तीन साल में मोदी सरकार को सुप्रीम कोर्ट में कई बार हार का सामना करना पड़ा। अगले दो साल सरकार कोई रिस्क नहीं लेना चाहती इसलिए अटॉर्नी जनरल बदलने का फैसला अब करीब-करीब हो चुका है।

कुलभूषण केस के बाद हरीश साल्वे की तारीफ सरकार से लेकर विपक्ष तक सबने की है। यहां तक कि पाकिस्तानी मीडिया ने भी कहा कि साल्वे ने एक रुपए लेकर एक घंटे की दमदार जिरह की और पाकिस्तानी वकील पांच करोड़ रुपए लेकर आधे घंटे तक सिर्फ कमजोर दलीलें ही पेश करता रहा। यानी कि इस समय साल्वे के पक्ष में माहौल बन चुका है, और सुनी-सुनाई है कि सरकार को लगता है कि यही सबसे सही वक्त है जब सरकार के सबसे बड़े विधि अधिकारी को बदल दिया जाए।

भारत में अटॉर्नी जनरल का कार्यकाल सिर्फ तीन साल का होता है। यानी कि इसी साल जून के महीने में मुकुल रोहतगी का कार्यकाल पूरा हो जाएगा। इसके बाद सुनी-सुनाई से कुछ ज्यादा है कि उन्हें दोबारा अटॉर्नी जनरल नहीं बनाया जाएगा। इस बार सरकार के शीर्ष नेतृत्व को उम्मीद है कि वे हरीश साल्वे को अटॉर्नी जनरल बनने के लिए मनाने में कामयाब हो जाएंगे।

इस वक्त हरीश साल्वे देश के सबसे महंगे वकील माने जाते हैं। वे कुलभूषण जाधव से लेकर सलमान खान, मुकेश अंबानी और वोडाफोन तक के केस सफलतापूर्वक लड़ चुके हैं। सलमान खान को तो 'हिट एंड रन' मामले में पांच साल की सजा होने के बाद उसी दिन साल्वे ने हाई कोर्ट से जमानत दिलवा दी थी। उनके जानकार वकीलों की मानें तो वे एक दिन जिरह करने के लिए कम से कम पांच लाख रुपए फीस लेते हैं। लेकिन अगर मामला जनहित या पर्यावरण जैसे मुद्दों से जुड़ा हो तो वे एक रुपए की फीस में भी मुकदमा लड़ते हैं। वे अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार में देश के सॉलिसिटर जनरल भी रह चुके हैं।

शायद इस वक्त हरीश साल्वे इकलौते वकील हैं जिन्होंने बार-बार अटॉर्नी जनरल बनने का प्रस्ताव ठुकराया है। जब अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार थी और सोली सोराबजी का कार्यकाल पूरा हो चुका था तो उस वक्त भी हरीश साल्वे के पास अटॉर्नी जनरल बनने का प्रस्ताव भेजा गया था जिसे उन्होंने अस्वीकार कर दिया था। लेकिन चर्चा है कि इस बार वे मोदी सरकार का प्रस्ताव स्वीकार कर सकते हैं। (सत्याग्रह)

बिहार में वैसे तो कड़ी शराबबंदी, पर मिलता है ब्रांड रमा शंकर...

मनीष शांडिल्य

पटना, 24 मई (बीबीसी)। बिहार में पूर्ण शराबंबदी के बाद शराब तस्कर तू डाल-डाल, मैं पात-पात की तर्ज पर पुलिस को चकमा देने की कोशिशों में लगे हैं। बीते करीब सवा साल में शायद ही कोई दिन ऐसा गुजरा हो जब शराब जब्त न की गई हो। लेकिन कभी-कभी शराब तस्करी के ऐसे तरीके जरूर सामने आ जाते हैं जो दांतों तले उंगली दबाने को मजबूर कर दें।

अवैध कारोबारी एलपीजी के सिलेंडर से लेकर ट्रक-ट्रैक्टर के ट्यूब तक का इस्तेमाल शराब तस्करी के लिए कर रहे हैं। शराब के अवैध कारोबारी अब शराब की डिलीवरी के लिए कोड वर्ड का भी इस्तेमाल शुरू कर चुके हैं।

भोजपुर जिले के एसपी छत्रनील सिंह ने बीबीसी से बातचीत में इस खबर की पुष्टि की है। हालांकि उन्होंने कोई ऐसा कोड-वर्ड नहीं बताया, लेकिन पूर्वी चंपारण जिले से इस संबंध में एक रोचक जानकारी मिली।

वहां सूत्रों ने बताया कि विदेशी शराब के एक लोकप्रिय ब्रांड जिसे बोलचाल में आरएस कहा जाता है, उसके लिए जिले में रमा शंकर कोड-वर्ड का इस्तेमाल हो रहा है। जबकि शराब तस्करी के कोड-वर्ड पर स्थानीय अखबार हिंदुस्तान टाईम्स की खबर के मुताबिक, जहांगीर कि गफूर कि छोटा-बड़ा सिरप और नेपाल जैसे कोड-वर्ड का इस्तेमाल शराब के अवैध धंधे में हो रहा है।

शराब तस्करी का चौंका देने वाला सबसे ताजा मामला सूबे के रोहतास जिले में सामने आया है। सासाराम मुफस्सिल थाने को 12 मई को यह गुप्त सूचना मिली थी कि इलाके के वजीरगंज गांव में जमीन में खोह (गुफा) बनाकर शराब रखी गई है।

पुलिस खोज-बीन के बाद खोह ढूंढने में कामयाब तो रही, लेकिन इसे देखने के बाद बारी हैरान होने की थी। करीब डेढ़ फुट मुंह वाला यह खोह ऐसा था कि इसमें कोई सांप की तरह ही रेंग कर घुस पाता, लेकिन अंदर यह इतना बड़ा था कि इसमें देशी शराब के करीब पचास बोरे छिपाकर रखे गए थे।

पुलिस के अनुसार, इसे बाहर से बढ़िया तरीके से ढंककर रखा गया था, लेकिन इसके मुंह के आस-पास खुदाई वाली जो ताजी मिट्टी थी, उसने इसका राज खोल दिया। इस खोह और इसके आस-पास दूसरे ठिकानों से पुलिस ने उस दिन करीब पांच हजार लीटर देसी शराब जब्त की थी। यह इस थाने के इलाके से अब तक की सबसे बड़ी बरामदगी थी, लेकिन इस मामले में किसी की गिरफ्तारी नहीं हुई है।

बीते महीने अप्रैल में मुजफ्फरपुर शहर में जिले की उत्पाद पुलिस ने दो अलग-अलग कार्रवाइयों में ऐसी टूरिस्ट बसों को जब्त किया था जो केवल शराब लेकर दिल्ली और हरियाणा से मुजफ्फरपुर पहुंची थीं। पहला मामला 13 अप्रैल का है। इसमें टूरिस्ट बस की छत पर खास केबिन बनाकर उसमें 44 कार्टन विदेशी शराब छुपाकर रखी गई थी। इस मामले में टूरिस्ट बस के ड्राइवर को पुलिस ने गिरफ्तार भी किया है।

इस घटना के पांच दिन बाद उत्पाद विभाग को फिर यह गुप्त सूचना मिली कि एक और टूरिस्ट बस शराब लेकर मुजफ्फरपुर पहुंच रही है। पुलिस ने गाड़ी जब्त भी कर ली, लेकिन उसे कई घंटो तक इसमें छुपाकर रखी शराब का पता-ठिकाना नहीं मिला। **(बाकी पेज 18 पर)**

केतकि असोक, नव चंपक, बकुल कुल

एक कतरा लेखन का...

शाम के धुर्धके में मामाजी (सुरेश पंडाजी) घर पधारे तो उनके हाथों मेरे लिए एक सुनहरा और गमगमाता हुआ उपहार था। यह उपहार उनके घर से निकलते समय उनकी कार पर ऐसे झरा जैसे वह मुझ तक पहुँचने के लिए मामाजी से आग्रह कर रहा हो! जैसे वही कोई अमूल्य उपहार हो!!

यह और कुछ नहीं, बकुल था! बकुल यानी वर्षा ऋतु में खिलने वाले पुष्पों में कदम्ब के पश्चात सर्वाधिक उल्लेखनीय फूल! फूल छोटे-छोटे धवल-धवल। जिसके आँगन रात-रात झरें उसका आँगन फूलों की कालीन-सी।

हिन्दी में मौलसिरी या कहिए मौलश्री। सम्पूर्ण संस्कृत साहित्य में अपनी सुगंधि के कारण प्रेम और सौन्दर्य के प्रतीक के रूप में वर्णित। अपने विशाल आकार, घनी छाया और आमोदमय पुष्पों के कारण यह साधारण जन और कवि दोनों का परमप्रिय है।

सच या झूठ - मुझे नहीं पता लेकिन एक पुरानी मान्यता है- जो भी मनुष्य सड़क के किनारे 2 या 2 से अधिक मौलश्री के वृक्षों का रोपण एवं पालन करता है, वह एक सौ यज्ञों को करने का पुण्य प्राप्त करता है।

कहते हैं यमुना किनारे इसी बकुल वृक्ष के नीचे खड़े होकर कृष्ण बाँसुरी बजा-बजा कर गोपांगनाओं का मनरंजन किया करते थे। रामायण में वसंत ऋतु में इसका खिलना वर्णित है और महाभारत में भी। अय्यर ने अपनी पुस्तक The antiquity of some field and forest flora of India' (1956) में संकेत किया है कि बकुल गंधमादन पर्वत पर विकसित पुष्प-वृक्षों (रामायण) एवं युधिष्ठिर की राजधानी इन्द्रप्रस्थ में रोपित वृक्षों (महाभारत) में से एक है।

वाल्मीकि रामायण में भी पम्पासर वन, लंका के अशोक वन आदिस्थानों पर इस वृक्ष के होने के संकेत है। रघुवंश में बकुल की सर्वोल्लिखित प्रसिद्धि का उल्लेख है तो अभिज्ञानशाकुंतल मंत इसी प्रसिद्धि के विवरण के साथ यह सूचना भी कि बकुल के यह पुष्प सूर्यातप से मुरझा कर भी अपनी सुगंध नहीं खोते। साहित्य में राजशेखर ने इसके वसंत-विकास का वर्णन किया है, इसी संदर्भ में इस कवि प्रसिद्धि का भी समर्थन होता है जिसमें कहा गया है कि बकुल स्त्रियों की मुख मदिरा से सिंचकर पुष्पित हो उठता है। सेनापति कहते हैं- केतकि असोक, नव चंपक बकुल कुल, कौन धौं बियोगिनी को ऐसो बिकरालु है।

यह ओडिया संस्कृति के उन्नायक जगन्नाथ का सर्वाधिक प्रिय पुष्प भी है। आज भी पुरी में जगन्नाथ स्वामी के श्रृंगार के समय इसका खयाल रखा जाता है।

जब हम युवा थे तो यह ओडिया गीत आकाशवाणी संबलपुर में बजते हुए बहुत चाव से सुनते थे- ले ले ले बऊल... खुसा तले मली फुल्ल। (अर्थात् ओ बकुल (प्रेमिका) लो, तुम्हारी बेणी पर तो मोंगरे फूल खोंस दूँ)

-जयप्रकाश मानस